शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

फेक समाचारों का अध्ययन (कोविड-19 के संदर्भ में)

बीज शब्द :

कोविड-19, फेक समाचार, सोशल मीडिया

सूचना समाचार की दुनिया में फेक समाचार आज एक बहुत ही सुपरिचित शब्द बन गया है। डिजिटल तकनीक एवं सोशल मीडिया के उदय के साथ ही फेक समाचारों का प्रचार प्रसार भी काफी व्यापक तौर पर होने लगा है। सोशल मीडिया पर फेक समाचार आडियो, वीडियो, फोटो, टेक्स्ट आदि सभी रूपों में पाये जाते हैं। इस प्रकार के समाचारों की उत्पत्ति एवं प्रसार के कारण प्राय: काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे निपटने के लिए कई स्तरों पर प्रयास भी लगातार किये जा रहे हैं। कोविड बीमारी के दौरान भी सोशल मीडिया पर फेक समाचार काफी अधिक संख्या में सतत् दिये जाते रहे हैं। प्रस्तुत शोध में सोशल मीडिया पर कोविड समाचार के सन्दर्भ में डाले गये फेक समाचारों का अध्ययन किया गया है। इसके अन्तर्गत यह पता लगाने का प्रयास किया गया है कि कोविड से सम्बन्धित किस प्रकार के फेक समाचार दिये गये हैं। इसी के साथ यह भी पता लगाने की कोशिश की गयी है कि फेक समाचार देने के पीछे क्या कारण हैं और इस प्रकार के समाचारों का प्रभाव क्या है तथा इसे रोकने के लिए क्या प्रयास किये जाते हैं। इस गुणात्मक अध्ययन के लिए द्वितीयक सामग्री का मुख्यत: उपयोग किया गया है।

*****

अरविन्द कुमार सिंह
पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान,
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

फेक समाचारों का अधययन(कोविड-19 के संदर्भ में)

फेक समाचार का भिन्न भिन्न लोगों के लिए भिन्न भिन्न अर्थ हो सकता है। इसे विविध प्रकार से परिभाषित किया गया है। विभिन्न मीडिया प्लेटफार्म पर झूठे सूचनाओं को दिया जाना ही फेक समाचार कहलाता है।[1,2] ये कई प्रकार के हो सकते हैं।[3] जनमाध्यमों में फेक समाचारों का प्रकाशन किसी भी प्रकार से कोई नयी बात नही है। सोशल मीडिया पर फेक समाचार आडियो, वीडियो, फोटो, टेक्स्ट आदि सभी रूपों में पाये जाते हैं। यूनाइटेड स्टेट आफ अमेंरिका जैसे देश में मौसम बदलाव की सूचना में भी काफी झूठी बातें बतायी जाती हैं और उससे लोग प्रभावित भी होते हैं।[4] भारतीय जनमाध्यमों में एक लंबे समय से फर्जी समाचार प्रकाशित किए जाते रहे हैं। पहले इनकी संख्या सीमित होती थी और कुछ लोग ही इस कार्य को कर पाते थे।

फेक समाचारों के प्रकाशन के पीछे विविध प्रकार के उद्देश्य होते हैं।[5] कई बार वे अपने मंतव्य में सफल भी हो जाते रहे हैं। फेक समाचार सभी विषयों से जुड़ करके दिये जा रहे हैं। इसमें स्वास्थ्य एवं बीमारी के संदर्भ में फेक समाचार का दिया जाना भी शमिल है। प्रशासन, डाक्टर और मेडिकल के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य लोगों के लिए हमेशा से फेक समाचार एक चुनौती के रूप में रहे हैं। विभिन्न बीमारियों और उनके इलाज के संदर्भ में बहुत सी झूठी बातें काफी पहले से प्रकाशित होती रही हैं।[6] कुछ अवसरों पर इस प्रकार के झूठे समाचार बढ़ भी जाते हैं। खास करके जब किसी प्रकार की कोई आपदा या बीमारी आती है और लोग उससे परेशान हो जाते हैं तथा उसके समाधान के तलाश में रहते हैं तो इस प्रकार के समाचारों की भी बाढ़ सी आ जाती है। यह भी देखा गया है कि फेक समाचारों के आधार पर राजनीतिक क्षेत्र में काफी लम्बे समय तक विवाद चलते रहते हैं।[7] राजनीतिक क्षेत्र में फेक समाचारों की प्राय: भरमार लगी रहती है।[8] धार्मिक क्षेत्र में भी फेक समाचार दिये जाते हैं। ऐसे समाचार एक वायरस की तरह से हैं जो कि सत्य समाचार की तुलना में काफी तेज गति से दूर दूर तक विभिन्न सोशल मीडिया पर ये फैलते हैं और यह इन पर काफी दिनों तक टिके रहते हैं।[9] वहीं दूसरी तरफ, यह भी सत्य है कि कई बार किसी समाचार को कई कारणों से फेक समाचार कह करके प्रचारित किया जाता है और बाद में वह सत्य साबित होता है।[10]

समस्या का वर्णन- वर्ष 2019 के दिसम्बर माह से कोविड की समस्या एक बहुत ही भयानक समस्या के रूप में सम्पूर्ण मानव के समक्ष परिलक्षित हुई है। मानव समाज के इतिहास में इस प्रकार की समस्या सदियों में कभी कभी इस रूप में आती रही हैं जिसमें कि सभी मानव जाति अपने को असहाय रूप में महसूस करती हैं। ऐसी स्थिति में कही से भी किसी प्रकार की जब कोई आशा की किरण दिखती है तो फिर वे उस तरफ उम्मीद भरी नजरों से देखते हैं। किन्तु ऐसे अवसरों पर ही उन लोगों की भी कमी नही है जो कि अपने निहित क्षुद्र स्वार्थो के लिए झूठे समाचारों को प्रचारित एवं प्रसारित करते हैं। कोविड बीमारी के आगमन के साथ ही बहुत बड़ी संख्या में इसके बारे में जनमाध्यमों और विशेष तौर पर सोशल मीडिया पर झूठे समाचार भी दिये जाने आरम्भ हो गये।[11] इन समाचारों का काफी प्रभाव भी पड़ा है। इस प्रकार के समाचार देने के पीछे निश्चित रूप से कुछ कारण होते हैं जिन्हे कि समझने और जानने की आवश्यकता है। कोविड आपदा के समय एक झूठा समाचार जो कि सभी जगहों पर आया है, वह कोविड के इलाज एवं कोविड-19 टीकाकरण के खिलाफ रहा है। कोविड के दौरान फेक समाचारों की संख्या लगातार बढ़ती ही रही है। ऐसे समाचारो में से कई समाचार विश्व स्तर पर प्रचारित और प्रसारित होते हैं। भारत ही नही, दुनिया के अन्य देशों में भी फेक समाचार की समस्या से लोग परेशान हैं। डिजिटल तकनीक ने कोविड के दौरान फेक समाचारों के दायरे का काफी व्यापक बना दिया है। गाई बर्गर(2021) जो कि यूनेस्को में संचार एवं सूचना के नीति एवं रणनीति से जुड़े मामलों के निदेशक हैं, उनका मानना है कि कोविड से सम्बन्धित झूठे समाचार बहुत ही सामान्य बात हो गयी है।[12] विज़य के अनुसार फेक समाचारों की व्यापकता भी कम या अधिक होती है। सोशल मीडिया पर फेक समाचारों का प्रसारण व्यक्ति एवं समाज पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसलिए इस विषय पर अध्ययन लोगों का काफी ध्यान खींच रहा है।[13]

साहित्य अध्ययन- फेक समाचार के बारे में शुरू से ही काफी अध्ययन किये गये हैं जो कि इससे विविध पक्षों से जुड़े हुए हैं। इन अध्ययनों में आनलाइन प्लेटफार्म पर कोविड से जुड़े अफवाह एवं साजिशों और उससे सम्बन्धित विषय सामग्री का और फिर इस प्रकार के गलत सूचनाओं से निपटने और टीकाकरण कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए उस सन्दर्भ में किये जाने वाले कार्यक्रमों का अध्ययन किया गया है। इस्लाम(2021) द्वारा किये गये अध्ययन में यह पाया गया कि कुल 637 टीका सम्बन्धी समाचारों में 91 प्रतिशत अफवाह एवं 9 प्रतिशत कन्सपायरेसी

सिद्धान्त से जुड़ करके समाचार दिये गये थे। ये समाचार कुल 52 देशों से लिये गये थें। इसमें 578 समाचार अफवाह से जुड़े थे, जब कि 36 प्रतिशत टीकाकरण कार्य की उपलब्धता और पहुँच के विविध पहलुओं से जुड़ करके रहे और 20 प्रतिशत समाचार रोग और मृत्यु दर से जुड़ करके रहे। 8 प्रतिशत समाचार सुरक्षा पहलु से और शेष समाचार अन्य पक्षों से सम्बन्धित रहे। इन कुल 637 समाचारों में सिर्फ पॉच प्रतिशत समाचार सत्य रहे जबकि शेष समाचार झूठे रहें। इसी प्रकार से इसमें 10 प्रतिशत समाचार गुमराह करने वाले थे जबकि 2 प्रतिशत समाचार को बढ़ा चढ़ा करके बताया गया था।(14) एक अन्य अध्ययन सलमान(2020) द्वारा किया गया है जिसमें कि स्वास्थ्य से जुड़ करके सोशल मीडिया पर दिये गये फेक समाचारों का लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।(15) मुहम्मद सैयद अल जमन(2021) द्वारा किये गये अध्ययन में पाया गया है कि फेक समाचारों के छः मुख्य विषयवस्तु रहे हैं। इसमें स्वास्थ्य, धर्म, राजनीति, मनोरंजन, अपराध एवं अन्य प्रकार के मिले जुले समाचार हैं। इसमें स्वास्थ्य से सम्बन्धित फेक समाचार सबसे अधिक पाये गये हैं, यह 27.2 प्रतिशत रहा। इसी प्रकार से धर्म से सम्बन्धित फेक समाचार 25.1 प्रतिशत और राजनीति से सम्बन्धित फेक समाचार 24.3 प्रतिशत रहे हैं। इस अध्ययन में इन तीनों विषयों को जोड़ करके कुल 76.6 प्रतिशत समाचार पाये गये हैं। इसमें मनोरंजन से सम्बन्धित समाचार सबसे कम दिया गया हैं।(16)

वायर समाचार संगठन द्वारा एक जनवरी से 24 दिसम्बर 2020 के बीच किये गये अध्ययन में पाया गया कि भारत के समाचारपत्र, समाचार चैनल, वेबसाइट एवं समाचार एजेंसी द्वारा कई राष्ट्रीय मुद्दों पर फेक समाचार दिये गये। इसमें कोविड से सम्बन्धित फेक समाचार प्रमुख फेक समाचार के तौर पर रहे।(17) इन सब अध्ययनों से स्पष्ट है कि फेक समाचार के विविध पक्षों पर सतत् अध्ययन किये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में प्रस्तुत अध्ययन का महत्व काफी बढ़ जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य- *प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया पर कोविड के बारे में दिए जाने वाले उन समाचारों का अध्ययन करना है जो कि असत्य और फेक होते हैं, वे सत्य और वास्तविक रूप में बना करके प्रस्तुत किए जाते रहे हैं और इन्हे फेक समाचार के रूप में जाना जाता है। इन कोविड समाचारों के कुछ प्रमुख पक्षों का गुणात्मक ढंग से विश्लेषण करना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इस सन्दर्भ में निम्न बातों को जानने का प्रयास किया गया है -*

- किस प्रकार के फेक समाचार दिये जाते हैं? - ऐसे संदेशों के पीछे क्या मंतव्य होते हैं?
- फेक समाचारों का प्रसार कैसे होता है?
- इन समाचारों का क्या प्रभाव पड़ता है?
- इससे किस प्रकार की समस्या उत्पन्न होती है?
- फेक समाचारों को रोकने हेतु क्या उपाय किए गए हैं?
- फर्जी समाचारों के मूल स्रोत क्या हैं?
- समाचारों की जांच कौन करता है?

अध्ययन पद्धति- प्रस्तुत अध्ययन के लिए गुणात्मक निरीक्षण विधि का उपयोग किया गया है। इसमें विविध को द्वि तीयक सूचना सामग्री स्रोतों का निरीक्षण करके अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रख करके इनके उत्तर जानने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन के लिए बहुत बड़ी संख्या में विविध प्रकार के स्रोतों को लिया गया है जिसमें गूगल, गूगल फैक्ट चेक, फेसबुक, यूट्यूब, विविध टीवी एवं समाचार पत्र के वेबसाइट एवं अन्य विविध रिपोर्ट शामिल हैं। अध्ययन में निर्धारित किये गये उद्देश्य को ध्यान में रख करके इसकी जानकारी द्वितीयक स्रोतों से ही ली गयी है।

अध्ययन की सीमा- इस अध्ययन को कोविड बीमारी से जुड़ करके दिये जाने वाले फेक समाचारों के सन्दर्भ में विशेष तौर पर तैयार किया गया है।

-इस अध्ययन में सोशल मीडिया पर दिये जाने वाले फेक कोविड समाचारों को ही लिया गया है।

-सोशल मीडिया के उन फेक समाचारों को विशेष तौर पर लिया गया है, जिनका जिक्र अन्य माध्यमों पर फेक समाचार के तौर पर किया गया है।

-इस अध्ययन में साइबर अपराध सम्बन्धित समाचार शामिल नही किये गये हैं।

-इस अध्ययन में अन्य देशों के सन्दर्भों को लिया गया है, किन्तु यह अध्ययन भारत के सन्दर्भ में मुख्य तौर पर किया गया है।

फेक समाचार के विषयवस्तु- विभिन्न प्रकार के फेक समाचार का अध्ययन करने के बाद कई तथ्य उभर करके सामने आये हैं। कोविड के भिन्न भिन्न पक्षों के बारे में चर्चा की गयी है। फेक समाचारों के विषयवस्तु में कोविड से बचाव एवं कोविड टीका सबसे मुख्य विषय रहे हैं। एक फेक समाचार में कोविड से बचाव के सन्दर्भ में कहा गया है कि आधी प्याज कमरे में रखने पर कोविड के वायरस को वह पकड़ लेगा। इसी प्रकार धूप से

कोविड से बचाव की बात भी कही गयी है।[18]

वैसे आनलाइन माध्यमों पर स्वास्थ्य एवं धर्म के बारे में अधिक फेक समाचार प्रकाशित किये जाते हैं।[19] कोविड से सम्बन्धित समाचार काफी पोस्ट किये गये। यह पाया गया है कि अधिकतर फेक समाचार कोविड बीमारी के विविध पहलुओं से जुड़ करके हैं। एक अध्ययन में तो पाया गया कि अधिकतर फेक कोविड समाचार राजनीतिक विषय सन्दर्भ से जुड़े रहे और कोविड के मरीजों एवं उससे मरने वालों की संख्या और रोक थाम तथा इलाज के तरीकों के बारे में दिये गये हैं। फेसबुक आदि सोशल मीडिया पर कोविड फेक समाचार में कोविड बचाव के बारे में काफी सामग्री दी गयी है। कोविड बीमारी कैसे फैल रही है, इससे सम्बन्धित किसी भी प्रकार के तथ्य को जानने की सबमें उत्सुकता होती है। यह अपेक्षाकृत हर प्रकार से नई घटना थी, इसके पूर्व इस प्रकार की न किसी बीमारी का नाम सुना गया था, न ऐसी किसी स्थिति का सामना किया गया था। इसके बारे में सभी लोग अधिक से अधिक बातें जानने के लिए उत्सुक रहे हैं। यह एक समस्या के रूप में थी, इसलिए इससे जुड़ी बातों को जानने की सबकी मजबूरी भी रहती थी। इसके बारे में किसी को कोई खास समझ नही रही थी। इस हालत में कोविड-19 के बारे में कुछ भी जानकारी बहुत तेजी से वायरल होती थी।

फेक समाचारों का प्रसार- फेक समाचारों के प्रसार के पीछे कई कारण हैं। फेक समाचार सोशल मीडिया के द्वारा ही मुख्य रूप से फैलता है। यह लोगों की पहुँच में है। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक होता हुआ एक बहुत बड़े समुदाय तक पहुँचता है। हम सामान्य तौर पर जिन लोगों के साथ सोशल मीडिया से जुड़े रहते हैं, उन पर अधिक विश्वास करते हैं, इसलिए इस पर भागीदारी की जाने वाली किसी भी प्रकार की सामग्री पर भी कहीं अधिक विश्वास करते हैं। अन्य की तुलना में फेसबुक सोशल मीडिया सामान्य तौर पर कोविड फेक समाचार के लिए कही अधिक उपयुक्त प्लेटफार्म रहा है।[20] बार्सीलॉस एवं अन्य (2020) द्वारा गये शोध से ज्ञात हुआ कि कोविड से सम्बन्धित अधिकतर फेक समाचार फेसबुक और वाट्सएप द्वारा फैलाये गये थे।[21]

सोशल मीडिया पर अक्सर लोग उनसे बातचीत करते हैं जो कि उनके विचारों से मेल खाते हैं। इसलिए जब सोशल मीडिया पर किसी ऐसे समाचार को देखा जाता है जो कि किसी व्यक्ति के पूर्व विचारों की पुष्टि करता है तो उस समय वह उसको वह सीधे विश्वास कर लेता है। इस प्रकार कोविड पर दिये गये फेक समाचार सोशल मीडिया द्वारा ही सबसे अधिक फैलाया जाता रहा है।

फेक समाचारों की विशेषताएं- फेक समाचार की कई प्रकार की विशेषताएं होती हैं। इसके बारे में काफी शोध भी किये गये है।[22] इन्टरनेट आधारित जनमाध्यम पर फेक समाचार एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना बन चुकी है।[23] फेक समाचार की सबसे मुख्य विशेषता तो यह है कि ये तथ्यात्मक तौर पर असत्य होते हैं। इसे इस ढंग से बनाया गया रहता है कि लोग एक दूसरे के साथ इसे आसानी के साथ भागीदारी कर सके। इस तरह की सूचनाओं में लोगों की काफी उत्सुकता होती है। इसी के साथ यह लोगों के भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने का एक साधन भी है। फेक समाचार सनसनी खोज हो सकती है। ये प्रायोजित विषय सामग्री के साथ या फिर कुछ तथ्यों के साथ दिये गये हो सकते है। फर्जी सूचनाओं के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात यह भी होती है कि वे सूचनाएं अधिक दी जाती हैं जो कि वर्तमान से जुड़ करके होती हैं। उदाहरण के लिए टीका लगवाने की जब प्रक्रिया आरम्भ हुई तो फिर कोविड के लिए टेलीग्राम अकाउंट से पंजीकरण का संदेश सोशल मीडिया पर वायरल होता रहा, जबकि इस पर ऐसी कोई सुविधा नही दी गयी थी। इसी तरीके से व्हाट्सएप पर एक मैसेज वायरल हुआ कि टीका लगवाने के लिए व्हाट्सएप के जरिए पंजीकरण कराया जा सकता है। यह भी एक झूठा समाचार था।[24]

विविध प्रकार के फेक समाचार- पूरी दुनिया में बहुत ही अधिक मात्र में फेक समाचार प्रकाशित किये जाते हैं। इससे इस महामारी के खिलाफ संघर्ष और भी कठिन हो जाता है।[25] कोविड से बचाव का मास्क एक बहुत ही कारगर उपाय माना गया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इसे लगाने के लिए लगातार सलाह देते रहे हैं। घर से बाहर निकलने पर डबल मास्क लगाने का भी सलाह दिया गया है। उधर सोशल मीडिया पर फेक समाचार में मास्क लगाने पर शरीर में कार्बन डाइआक्साइड की मात्र बढ़ जाने और आक्सीजन की मात्र कम हो जाने की बात कही गयी है। यह पोस्ट लोगों के मन में डर, आशंका और हैरानी पैदा किया। इस पोस्ट में यह भी कहा गया कि एक व्यक्ति को दिन भर में 550 लीटर आक्सीजन की जरूरत होती है, किन्तु मास्क लगाने पर उसे 250 से लेकर के 350 लीटर ही आक्सीजन मिल पाती है। और शरीर में आक्सीजन कम हो रही है।[26] इस वायरल पोस्ट पर पी आय्र बी द्वारा खंडन किया गया है और करोना बचाव के लिए मास्क को सही तरीके से लगाने को आवश्यक बताया गया है।[27] कोरोना बीमारी की दूसरी लहर के दौरान सोशल मीडिया

पर इस बीमारी से निपटने के लिए विभिन्न प्रकार के उपायों के बारे में जानकारी दी जा रही है। इसमें से एक उपाय फिटकरी के पानी के सेवन की भी बात कही गयी है। इसमें बताया गया है कि इससे करोना बीमारी के संक्रमण से बचा जा सकता है। इससे वायरस शरीर में प्रवेश नही करता है। यह दावा भी बाद में झूठा पाया गया।[28] एक फेक समाचार के अन्तर्गत यह बताया गया था कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में लॉक डाउन के सन्दर्भ में चार चरणीय प्रोटोकाल एवं प्रक्रिया को जारी किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस समाचार का खंडन करते हुए लोगों से कोविड से सम्बन्धित समाचार एवं सत्य तथ्य को जानने के लिए भारत के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के वेबसाइट को देखने के लिए कहा।[29]

सोशल मीडिया पर फेक समाचार- सोशल मीडिया लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने की सहुलियत प्रदान की है। किन्तु इसी के साथ यह झूठे एवं फर्जी समाचारों का एक बहुत ही बड़ा प्लेटफार्म बन गया है। कोविड के दौरान सोशल मीडिया पर फर्जी ढंग से वैक्सीन के बारे में प्रचार का भी प्रयास किया गया।[30] विभिन्न जगहों पर कोविड के बारे में दिये गये फेक समाचारों की सूची भी दी गयी है जिसे देख करके इसकी विविधता का अनुमान लगता है।[31] यह लोगों को भ्रमित भी करता है और लोगों को यह समझ में नही आता है कि क्या करें और क्या न करें। सोशल मीडिया किसी भी सूचना पर काफी अधिक नियंत्रण रखती है। झूठे समाचारों के लिए फेसबुक कहीं अधिक उपजाउ जगह है।[32] अमेरिकी राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया पर आरोप लगाया है कि कोविड एवं वैक्सीन के बारे में फेक समाचार के माध्यम से वह लोगों का जीवन समाप्त कर रहा है।[33]

फेक समाचार के कारण लोगों की धारणा भी बदल जाती हैं। इस प्रकार के समाचार प्राय: चिकित्सा विज्ञान के मानक कार्यों के विपरीत प्रचार करते हैं। इस कारण उन्हें अपने कार्यों के निर्वहन में समस्या आती हैं। कोविड-19 के दौरान जबकि विभिन्न स्वास्थ्यकर्मी भी बीमारी के निस्तारण के बोझ तले दबे हुए हैं, ऐसी स्थिति में कोई भी झूठा समाचार उन्हें अपने कार्यों को सही प्रकार से करने में अवरोध के तौर पर ही कार्य करता है। इसका उन पर भी बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह काम के प्रति लगाव कम करता है और उनकी सुरक्षा की भी समस्या खड़ी हो जाती है और वह असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। यह डाक्टरों के लिए एक बहुत ही चिन्ता का विषय बन गया है।[34] कई बार ऐसा भी हुआ है कि जब ग्रामीण व कस्बाई क्षेत्रें में स्वास्थ्यकर्मी की टीम कोविड-19 की जॉच करने के लिए गयी है तो संबंधित क्षेत्रें में लोगों के बीच कोविड संबंधित भ्रांतियों के कारण उन पर पर हमला किया गया है और लोग कार्य को कुशलतापूर्वक नही कर पाते हैं।[35]

फेक समाचार का कारण- फेक समाचारों के प्रसार के अनेक कारण हैं। पारम्परिक माध्यमों में गेटकीपिंग की व्यवस्था है, किन्तु सोशल मीडिया पर ऐसा कुछ भी नही है। इस प्रकार के फेक समाचार के न रूकने के पीछे एक बड़ा कारण यह भी रहा कि इसे रोकने के लिए किसी प्रकार का कोई बहुत प्रभावी तंत्र विकसित नही किया जा सका है। भारत में सोशल मीडिया को सेफ हार्बर का दर्जा प्राप्त है। इस कारण से सोशल मीडिया की ऐसे फेक समाचारों के प्रति किसी प्रकार की कोई जिम्मेदारी नही होती है और उनका कोई नुकसान नही होता है। इसके विपरीत यदि कोई विवादपूर्ण अथवा शरारतपूर्ण समाचार होता है तो वह खूब वायरल भी होता रहता हैं, इस कारण से उसके दर्शक बढ़ते हैं और सोशल मीडिया कम्पनियों को आर्थिक लाभ होता है। बहुत से सूचनाओं को देने के पीछे लोगों की व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करना भी है। जिससे कि बाद में उसका वह दुरुपयोग कर सके। उदाहरण के लिए सोशल मीडिया पर एक ऐसा संदेश वायरल हुआ है जिसमें कि कोविड-19 प्लान के अंतर्गत 10,000 लोगों को नकद धनराशि वितरित किए जाने की बात कही गई है। स्पष्ट है कि वे इस प्रकार की धनराशि देने की बात कह करके पंजीकरण के नाम पर लोगों से उनके व्यक्तिगत निजी सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।[36]

फेक समाचारों की चुनौती- वास्तव में झूठे समाचार चुनौती बनते जा रहे है। इस संदर्भ में सरकार के विभिन्न इकाईयॉं फेक समाचार को रोकने के लिए प्रयास कर रही हैं। फेक समाचार के बारे में जानकारी एकत्र करके पूर्व उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। कोविड-19 के प्रसार के दौरान भी सरकार द्वारा प्रयास किए गए हैं। सोशल मीडिया पर भ्रामक और झूठी बातों को फैलने से रोकने के लिए मुंबई पुलिस द्वारा कानून बनाया गया है। इससे व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया पर संदेशों और फोटो के द्वारा झूठी सूचनाओं के प्रसार पर रोक लगाया गया है। यह भी एक रोचक बात है कि मुंबई पुलिस द्वारा पारित किये गये आदेश के खिलाफ कुछ लोगों ने मुंबई हाईकोर्ट में याचिका भी दायर की है।[37] कोविड बीमारी के प्रसार एवं बचाव के सन्दर्भ में विविध प्रकार के समाचार जनमाध्यमों में दिये जाते रहे हैं। किसी एक समाचार में कहा गया था कि जूते एवं चप्पल से कोविड-19 फैल सकता है। दूसरी तरफ, जनमाध्यम ही इस

प्रकार के फेक समाचारों के बारे में स्पष्टीकरण भी देते रहे हैं।[38]

इसी प्रकार से यह समाचार भी काफी वायरल हुआ जिसमें कि कहा गया कि भारत में 5जी मोबाइल के जरिए कोरोना वायरस फैलता है, डब्ल्यूएचओ द्वारा इस बात को स्वीकार नही किया गया और उसने बताया कि कोविड उन देशों में भी फैला है जहां पर 5जी मोबाइल नेटवर्क नही है। अभिनेत्री जूही चावला द्वारा 5जी नेटवर्क के कथित दुष्प्रभाव को रोकने के लिए दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका डालने के कारण इस प्रकार के विश्वास को बढ़ावा मिलता है कि 5जी नेटवर्क के कारण कोविड बीमारी फैल रही है। यह बात दूसरी है कि सुनवाई के दौरान उच्च न्यायालय ने न केवल उस याचिका को खारिज कर दिया, वरन् याचिकाकर्ता पर 20 लाख रूपये का जुर्माना भी लगाया।[39]

इसी प्रकार से इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च (आईएमसीआर) की तरफ से एक फेक गाइडलाइन की एक लिस्ट सोशल मीडिया पर घूमती रही है, जिसमें कि कोविड के दौरान क्या करें और क्या न करें, इसके बारे में जानकारी दी गयी थी। यह लोगों के बीच में काफी अधिक प्रचारित हुई। किन्तु आईसीएमआर ने बताया कि उसकी तरु से इस प्रकार की कोई लिस्ट नही जारी की गयी है।[40]

फेक समाचार का प्रभाव- फेक समाचारों की प्रकृति के अनुसार इसका अलग अलग प्रभाव पड़ता है। इसके बारे में काफी अध्ययन किये गये हैं। फेक समाचारों का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका इसी बात से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि दुनिया में वर्ष 2020 में प्रथम तीन माह में लगभग 6000 लोग अस्पताल में भर्ती हुए। इस दौरान लगभग 800 लोगों की गलत सूचनाओं के कारण मृत्यु हुई। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसी गलत सूचना को इन्फोडेमिक नाम से संबोधित किया है जिसमें कि ऐसी सूचनाओं की बाढ़ आ जाती है, और जिसमें कि कुछ सही और कुछ गलत सूचनाएं दी गई रहती हैं। यह सूचना इस बीमारी के फैलने के साथ ही आरंभ हुई हैं। डिजिटल जोन में किसी भी प्रकार की बहुत ही प्रसारित होता है यह अनिश्चितता का संचार करता है।[41]

कोविड फेक समाचारों के प्रभाव के बारे में काफी अध्ययन भी किये गये हैं। फर्जी समाचारों का प्रभाव हर प्रकार से समाज, सरकार एवं व्यवस्था पर नकारात्मक ही पड़ता है। एक झूठी सूचना समाज में (खराब) तरीके से अपना प्रभाव छोड़ती हुई आगे बढ़ती है। समाचारों का जैसा भाव और विषय रहता रहा, उसी के अनुसार लोगों में उससे आशा, निराशा, आक्रोश या अन्य प्रभाव उत्पन्न होते हैं। झूठी बातों से समाज गुमराह होता है। जो बातें कही गई रहती है, उसी अनुसार वे कार्य में जुट जाते हैं। फेक समाचारों में कही बातें प्राय: जन समाज के हित को (शन्ति) हुए कही गई रहती हैं। किंतु वह कुल मिला करके समाचार समाज में समस्या उत्पन्न करती हैं। फर्जी खबरों से आम लोगों के मन में डर का भाव होता है। इसका मनोवैज्ञानिक असर यह होता है कि किसी भी केमिस्ट की दुकान पर बहुत बड़ी मात्र में लोग अनावश्यक दवा लेते दिख जाते रहे हैं। वाट्सएप पर चल रही दवाओं की लिस्ट देख करके भी लोग दवा ले रहे हैं। सोशल मीडिया एक खास प्रकार का माहौल तैयार कर दे रही है।

कई बार इन समाचारों के कारण कानून व्यवस्था की भी समस्या खड़ी होती है और विभिन्न विभागों को अपने स्तर से उसकी सत्यता स्पष्ट करने की आवश्यकता पड़ती है। इसमें काफी श्रम, समय, धन व्यय होता है। फेक समाचार में बतायी गयी बात को ध्यान में रख कर लोग उसी के अनुसार कार्य भी करते हैं। कई समाचार ऐसे भी दिए जाते रहे जिसमें कि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति को संर्न्दभित करके भ्रामक समाचार दिया गया। एक समाचार ऐसा दिया गया जिसमें बताया गया था कि चाय पीने से कोरोना वायरस पर लगाम लग सकता है। इस कारण चीन के अस्पतालों में कोविड-19 मरीजों को दिन में तीन बार चाय देना शुरू किया गया, जिससे कि करोना वायरस समाप्त हो। इसके पक्ष में तमाम प्रकार की बातें बताई गई हैं। यह समाचार पूरी तरीके से भ्रामक था।

टीकाकरण पर फेक समाचार का प्रभाव- कोविड-19 के बारे में विभिन्न प्रकार के झूठे समाचार दिए जाते रहे, किंतु उसमें से झूठे समाचार जो सभी जगहों पर एक समान तौर पर दर्ज हुआ था, वह कोविड-19 से बचने के लिए लगाये जाने वाले टीका को ले करके रहा। टीका के सन्दर्भ में सभी जगहों पर भ्रांतियां रही। टीका लगाने के विरोध में यूरोप के विकसित देशों में भी प्रदर्शन होते रहे। सोशल मीडिया पर कोविड टीकाकरण के खिलाफ पोस्ट की गयी बातों का कम्पेन काफी फैलता फूलता रहा है। इस प्रकार के फेक समाचार एक देश द्वारा एक दूसरे के खिलाफ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी चलाये जाने का आरोप लगा है।[42]

यूरोप के फांस और जर्मनी जैसे देशों में तो 10 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे कोविड-19 का टीका नही लगवाएंगे। इसी तरह से भारत के कई जगहों पर कोविड टीका लगवाने विरोध में काफी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए।[43] अन्धविश्वास और गलत सूचनाओं के कारण बोलिबिया में कोविड टीकाकरण कार्यक्रम प्रभावित हो रहा है। वहॉ टीकाकरण केन्द्र आधी खाली

होने की समाचार है।[44]

फेक समाचार को पहचानना एवं जाँचना–फेक समाचारों की समस्या को देखते हुए इनकी पहचान करने के सन्दर्भ में कुछ उपायों का वर्णन किया गया है। किसी समाचार को ऑख मूँद कर पहचानने के बजाय थोड़ा आलोचनात्मक अन्दाज अपनाना चाहिए। इसके समाचार स्रोत की जॉच की जा सकती है। जो विश्वसनीय समाचार स्रोत होते हैं, उससे दिये गये समाचार कहीं अधिक सही होते हैं। वे समाचार माध्यम या स्रोत जो कि कभी सुने गये नही रहते है या अनजान होते हैं, उसके बारे में विशेष जॉच कर ली जानी चाहिए। किसी भी समाचार के सन्दर्भ में प्रमाणों की जॉच की जा सकती है।[45] फेक समाचार के सन्दर्भ में फेसबुक ने उसे पहचानने के कुछ उपाय बताये हैं, जिससे कि उन्हे पहचानने में मदद मिल सकती है। इसमें फेक समाचारों के शीर्षक, उसका यूआरएल, समाचार स्रोत, असामान्य फार्मेटिंग, फोटो, तारीख, प्रमाण दूसरी रिपोर्ट को देख करके फेक समाचार की जॉच कर सकते हैं।[46] अन्य सोशल मीडिया ने भी इसी प्रकार से उपाय अपनाया है।

कई अन्य जनमाध्यमों ने स्वयं अपने स्तर से लोगों में जागरूकता फैला करके इस प्रकार के फेक समाचारों से सतर्क रहने के लिए कहा है। इसमें लेखक, लिंक, डोमेन नाम, शब्दों की वर्तनी आदि की जॉच करके इसके बारे में पता लगाया जा सकता है। गलत सूचना को विविध प्रकार से दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए व्यंग्य में ऐसी सामग्री देना जो कि भले ही गलत इरादे से न लिखी गयी हो, किन्तु वह प्रभावित करने की क्षमता रखती है। शीर्षक, कैप्शन आदि में गलत संयोजन करके प्रस्तुत किया जाता है जिसका कि उस सामग्री से कोई वास्ता न हो। इसी प्रकार से भ्रामक सामग्री के द्वारा दिये गये किसी सूचना के आधार पर नया मामला खड़ा किया जाता है। इसी तरह से फेक समाचार के अन्तर्गत किसी वास्तविक सूचना का दूसरे सन्दर्भ में इस्तेमाल किया जाता है। फेक समाचार के अन्तर्गत ही पूरी तरह से झूठी सामग्री गढ़ कर किसी वास्तविक सामग्री को इस ढंग से रखा जाता है जिससे कि वास्तविकता छिप जाती है।[47]

फेक समाचारों की जॉच– फेक समाचारों की जॉच के लिए कई प्रकार के उपाय किय गये हैं। इसकी जॉच फैक्ट चेकर से की जा सकती है। कोविड से सम्बन्धित कितने अधिक भ्रामक समाचार दिये गये हैं, वह इस बात से ही स्पष्ट है कि इन्टरनेशनल फैक्ट चेकिंग नेटवर्क के सहनिदेशक क्रिस्टीना टार्डागिला ने कहा है कि फैक्ट चेकर को कोविड से सबसे अधिक चुनौती मिली है।[48] किसी भी स्वतंत्र फैक्ट चेकर से इन खबरों की जॉच आसानी के साथ की जा सकती है। फेक समाचार के बारे में गूगल ने फैक्ट चेकर की व्यवस्था की है।[49] फेक समाचारों की जॉच के सन्दर्भ में अब तो बहुत बड़ी संख्या में फैक्ट चेकर एवं टूल आ गये हैं। इनकी मदद से किसी भी प्रकार के समाचार के तथ्यों की जॉच की जा सकती है। वर्तमान में बड़ी संख्या में समाचार माध्यम विभिन्न प्रकार के फेक समाचारों की जॉच करके उसकी भी जानकारी देते रहते है। समाचार माध्यम के आनलाइन पोर्टल पर भी सोशल मीडिया पर घूम रहे फेक समाचारों की जॉच करके उसके बारे में बताया जाता है। इसी प्रकार से टीवी माध्यम पर भी फेक समाचार के बारे में फैक्ट की जॉच करके उसे दिया जाता है। वे फेक समाचार जो कि काफी अधिक वायरल होते हैं, उसके बारे में जनमाध्यम प्राय: अपने ढंग से जॉच करके समाचार देते हैं। टाइम्स आफ इंडिया ने टाइम्स वेरिफायड कालम आरम्भ किया है।[50]

फेक समाचारों पर रोक के प्रयास– फेक समाचार काफी लम्बे समय से दिये जा रहे हैं। इस कारण इसे रोकने के सन्दर्भ में किये जा सकने वाले प्रयास को ले करके काफी लेख एवं शोध किये जाते रहे हैं। फेक समाचारों को रोकने के लिए सम्बन्धित देशों में कानून बने हुए हैं। कई बार सम्बन्धित देश की सरकारें इसे रोकने के लिए सोशल मीडिया को निर्देश देती हैं।[51] भारत सरकार ने कोविड संकट के दौरान सभी सोशल मीडिया को कई बार एडवाइजरी जारी की है। इसमें उनका सहयोग भी मॉगा गया है।[52] आलोचनाओं के बाद समय समय पर फेसबुक सोशल साइट फेक समाचार रोकने के लिए प्रयास किया है। फेक समाचारों से परेशान हो करके उसने बूम के साथ मिल करके यह कदम उठाने की तैयारी की है। इस प्रकार की पहल वह कई अन्य देशों में भी किया है।[53]

कोविड फेक समाचार की समस्या को हल करने लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अपने आनलाइन कोरोना वायरस सुझाव पेज पर एक मिथबस्टर सेक्शन जोड़ा गया है। इस पर कोरोना से जुड़े विविध प्रकार के कोरी कल्पनाओं का खंडन दिया गया है। उदाहरण के लिए इसमें इस बात का खंडन किया गया है कि अल्कोहल पीने या फिर अत्यधिक गर्मी या ठंडी में कोरोना वायरस को मर सकते हैं।[54]

सोशल मीडिया पर फैलाये जा रहे फेक समाचारों को रोकने के लिए विभिन्न वेबसाइट पर लेख दिये जाते रहे हैं। स्वयं सोशल मीडिया ने कई प्रकार के कदम पहले से ही उठाये।

वाट्सएप ने जिस सन्देश को कोई स्वयं न तैयार करके किसी के द्वारा पाने के बाद उसे दूसरे को देता है या आगे बढ़ाता है, उस पर फारवर्डेड टैग लगा देता है, जिससे कि कम से कम उसे पाने वाला व्यक्ति यह समझ जाये कि सन्देशदाता ने उसे स्वयं न तैयार करके किसी से प्राप्त करके बाद आगे बढ़ाया है। इसी प्रकार से सन्देश को सीमित व्यक्ति तक ही प्रेषित करने का प्रावधान कर दिया है और संदिग्ध एकाउन्ट को बन्द करने का भी प्रावधान किया गया है। इसने डिजिटल लिटरेसी कोर्स भी आरम्भ किया है।

इसी प्रकार से ट्विटर ने किसी सन्देहप्रद एकाउन्ट को रोक देने या फिर उसकी नजर में झूठे या अप्रमाणित सन्देश के साथ टैग लगाने का प्रावधान भी किया है। किन्तु ट्विाटर के इस पहल में समानता एवं एकरूपता नही होती है। सरकार की तरफ से भी फेक समाचार के सन्दर्भ में लोगों को जागरूक करने के लिए कई प्रकार के कदम उठाये गये हैं। सरकारी स्कूलों में इस सम्बन्ध में कार्यक्रम आयोजित किये जाते रहे हैं। भारत सरकार द्व ारा ट्विटर, फेसबुक एवं अन्य इन्टरनेट मीडिया पर डाले गये ऐसी पोस्ट हटाने का निर्देश दिया है, जिसमें महामारी को ले करके भ्रामक सूचनाएं फैलायी जा रही हैं। ल्यूमेन डेटा के हिसाब से ट्विीटर ने ऐसे 50 से ज्यादा पोस्ट हटाये।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विभिन्न सोशल मीडिया का सहयोग लेकर कोविड से सम्बन्धित फेक समाचारों की मानीटलरग शुरू की है। विभिन्न देशों में कोविड से संबंधित फेक न्यूज रोकने के लिए एक न्यूज़ ग्रुप में तैयार की गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग करके कोरोना बीमारी के बारे में किसी प्रकार की गलत एवं झूठी सूचना के खतरे के प्रति जागरूकता कम्पेन शुरू किया। स्टाप दी स्प्रेड एक ग्लोबल कम्पेन है जिसका उद्देश्य कोविड बीमारी के बारे में गलत सूचना के खतरे के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। इसी के साथ, लोगों को विश्वसनीय स्रोत जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि से किसी भी प्रकार की सूचना को कई बार जॉच करने की भी बात कही गयी है। यह कम्पेन कई देशों में आरम्भ किया गया है।

निष्कर्ष-

इस अध्ययन से निम्न मुख्य निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

-कोविड बीमारी के दौरान विविध प्रकार के फेक समाचार प्रसारित किये गये हैं।

-फेक समाचारों को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर दिया गया है।

-फेक समाचार के पीछे विविध प्रकार के कारण होते हैं।

-इस प्रकार के कोविड समाचार कोविड बीमारी के हर पहलू के बारे में दिये गये हैं, किन्तु कोविड से बचाव एवं एवं टीका लगाने के सन्दर्भ में सबसे अधिक दिये गये हैं।

-सोशल मीडिया फेक समाचारों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्लेटफार्म बना हुआ है।

-फेक समाचारों को रोकने के लिए विविध प्रकार से प्रयास किये जा रहे हैं।

-फेक समाचारों की जॉच कई प्रकार से की जा सकती है। इसके लिए फैक्ट चेकर भी आ गये हैं।

-कई सोशल मीडिया एवं अन्य जनमाध्यम फेक समाचार के विरूद्व जागरूकता का कार्य रहे है।

-फेक समाचारों के प्रसार को रोकने के लिए जनजागरण की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूचीः-

1. Fake news, https://www.dictionary.com/browse/fake-news- Evaluating the fake news problem at the scale of the information ecosystem , Jennifer Allen, , Baird Howland , Markus Mobius, David Rothschild and Duncan J. Watts , Science Advances, 03 Apr 2020: Vol. 6, no. 14, eaay3539, DOI: 10.1126/sciadv.aay3539
2. 2. Watts ,Nicola, 5 Types of 'Fake News' and Why They Matter, Ogilvy, 7 May, 2018,
3. https://www.ogilvy.com/ideas/5-types-fake-news-why-they-matter
4. Christopher, Bergland ; Fake News 'Vaccine' Inoculates Against 'Alternative Facts' New 'inoculation theory' could protect the masses from epidemics of fake news. Posted January 22, 2017
5. Four Reasons Why Fake News is So compelling, Turnitin , 27 August 2020, https://www.turnitin.com/blog/4-reasons-why-fake-news-is-socompelling
6. Zadrozny ,Brandy ; Social media hosted a lot of fake health news this year. Here's what went most viral.,U.S.News, Dec. 29, 2019, 5:39 PM IST, https://www.nbcnews.com/news/us-news
7. Fake news: a threat to public health, UICC NEWS, https://www.uicc. org/news/fake-news-threat-public-health, 1 April , 2020, updated 25 November, 2020
8. Allcott, Hunt, and Matthew Gentzkow. 2017. "Social Media and Fake News in the 2016 Election." Journal of Economic Perspectives, 31 (2): 211-36.
9. Diego Arguedas Ortiz, Could this be the cure for fake news? BBC, 14 November 2018, https://www.bbc.com/future/article/20181114could-this-game-be-a-vaccine-against-fake-news
10. Chengli Wang, Haifeng Huang, Comparative political studies, Volume: 54 issue: 5, page(s): 753-778, online: https://journals.sagepub.com/ doi/full/10.1177/0010414020957672?af=R&ai=1gvoi&mi=3ricys , September 14, 2020; Issue published: April 1, 2021
11. Sander van der Linden, Jon Roozenbeek and Josh Compton , Inoculating Against Fake News About COVID-19 12. During this coronavirus pandemic, 'fake news' is putting lives at risk: UNESCO, UN News, Global perspective Human stories,13 April , 2020. 13. Kai Shu etl, Fake News Detection on Social Media: A Data Mining
12. During this coronavirus pandemic, 'fake news' is putting lives at risk: UNESCO, UN News, Global perspective Human stories,13 April , 2020. 13. Kai Shu etl, Fake News Detection on Social Media: A Data Mining
13. Kai Shu etl, Fake News Detection on Social Media: A Data Mining Perspective,, ACM SIGKDD Explorations Newsletter, Volume 19Issue 1June 2017, pp 22–36, https://doi.org/10.1145/3137597.3137600
14. Islam MS, Kamal A-HM, Kabir A, Southern DL, Khan SH, Hasan SMM, et al. (2021) COVID-19 vaccine rumors and conspiracy theories: The need for cognitive inoculation against misinformation to improve vaccine adherence. PloS ONE 16(5): May 12 ,2021 , e0251605. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0251605
15. Salman Bin Naeem , Rubina Bhatti , Aqsa Khan , An exploration of how fake news is taking over social media and putting public health at risk, 2021 Jun;38(2):143-149. Doi: 10.1111/hir.12320.

Epub 2020 Jul 12
16. Al-Zaman, Md. S. (2021). Social Media Fake News in India. Asian Journal for Public Opinion Research, 9(1), 25–47. https://doi.org/10.15206/ajpor.2021.9.1.25
17. Here Are the Biggest Stories the Media Got Wrong in 2020, 30 December 2020. https://thewire.in/media/here-are-the-biggest-storiesthe-media-got-wrong-in-2020
18. Can coronavirus-related fake news actually change people's behaviour?, Here's what a first-of-its-kind study found. Ciara Greene, The Conversation, Jul 05, 2021 • 09:30 pm
19. Al-Zaman, Md. S. (2021). Social Media Fake News in India. Asian Journal for Public Opinion Research, 9(1), 25–47. https://doi.org/10.15206/ajpor.2021.9.1.25
20. Lisa Marshall Who shares the most fake news ? New study sheds light, CU Boulder Today, June 17, 2020.
21. Barcelos et al., Analysis of fake news disseminated during the COVID-19 pandemic in Brazil , Pan American Journal of Public Health,. https://www.paho.org/journal/en/articles/analysis-fake-newsdisseminated-during-covid-19-pandemic-brazil, Retrieved on July 20,2021
22. H. S. Al-Ash and W. C. Wibowo, "Fake News Identification Characteristics Using Named Entity Recognition and Phrase Detection," 2018 10th International Conference on Information Technology and Electrical Engineering (ICITEE), 2018, pp. 12-17, doi: 10.1109/ICITEED.2018.8534898.
23. Maria D. Molina etl , "Fake News" Is Not Simply False Information: A Concept Explication and Taxonomy of Online Content, American Behavioral Scientist, Vol 65, Issue 2, 2021,First published 14 October 2019
24. Shubham Singh, Beware! WhatsApp messages on COVID-19 vaccine are fake: Here's how to find out, Zee news, Apr 25, 2021, https:// zeenews.india.com/technology/beware-whatsapp-messages-oncoronavirus-vaccine-are-fake-here-s-how-to-find-out-2357443.html
25. Murali Krishnan, Fake news complicates fight against pandemic,DT Next , EPublished: May 05, 20210
26. jkBkSj] uouhr] D;k T;knk nsj rd ekLd yxk, jgus ls 'kjhj esa हो जायेगी आक्सीजन की कमी ? जानिए सच्चाई, अमर उजाला, 11 मई 2021
27. PIB Fact check website 28. क्या गर्म पानी पीने से कोरोना से होता है बचाव ? जानिए क्या है सच, इंडिया टीवी, 8 मई 2021
28. 29. Ministry for Health and Family welfare website. 30. Max
29. Fisher, Disinformation for hire, a shadow industry, is quietly booming, New York Times, Last Updated: Jul 26, 2021, , https://economictimes.indiatimes.com/news/international/business/disinformation-for-hire-a-shadow-industry-is-quietly-booming/ 31. Lytvynenko , Jane ; Here's A Running List of The Latest Hoaxes Spreading About The Corona virus, Buzz feed news, Last updated on March 24, 2020, https://www.buzzfeednews.com/article/ janelytvynenko/coronavirus-fake-news-disinformation-rumorshoaxes
30. Lisa Marshall Who shares the most fake news ? New study sheds light , CU Boulder Today, June 17, 2020. 33. Chaturvedi, Anumeha ;Fake news around coronavirus vaccine on the wane, but still a concern, Economic Times, Last Updated: Aug 06, 2021,
31. Lytvynenko , Jane ; Here's A Running List of The Latest Hoaxes Spreading About The Corona virus, Buzz feed news, Last updated on March 24, 2020, https://www.buzzfeednews.com/article janelytvynenko/coronavirus-fake-news-disinformation-rumorshoaxes
32. Lisa Marshall Who shares the most fake news ? New study sheds light , CU Boulder Today, June 17, 2020. 33.
33. Chaturvedi, Anumeha ;Fake news around coronavirus vaccine on the wane, but still a concern, Economic Times, Last Updated: Aug 06, 2021 34. Sandeep Unnithan , Covid second wave: Why doctors are alarmed over attacks on medical staff 34. Sandeep Unnithan , Covid second wave: Why doctors are alarmed over attacks on medical staff ,
34. India Today Insight,Delhi,May 3, 2021,UPDATED: May 4, 2021, https://www.indiatoday.in/india-todayinsight/story/covid-second-wave-why-doctors-are-alarmed-overattacks-on-medical-staff-1798489-2021-05-03
35. Ujjain villagers attack medical team believing vaccines are fatal, leave one injured, India Today Web Desk ,, Ujjain May 25, 2021, Updated: May 25, 2021.
36. WhatsApp Message Claiming That 10,000 People Will Get Cash Reward From WHO Under COVID-19 Relief Plan Is Fake, Know Truth Behind Fake Message Going Viral,Yahoo News, 20 May 2021
37. Lkks'ky ehfM;k ij >wB iQSykuk iM+sxk Hkkjh]eqacbZ iqfyl ds leFkZu esa gkbZdksVZ dk iQSlyk] vej mtkyk] eqacbZ]15 vizSy]2020
38. Tiwari, Pushkar ; Do shoes spread COVID-19? Does COVID-19 transmit through houseflies or mosquitoes? Read 18 corona virus facts and myths, Zee news, Dec 05, 2020,
39. 39-Poonam Sharma, Attempt to gain publicity': Delhi HC dismisses Juhi Chawla's plea against 5G network, imposes Rs 20 lakh fine , India Today, New Delhi, June 4, 2021 , UPDATED: June 4, 2021
40. 40-dksjkuk ok;jl dh iQsd ,Mokbtjh lks'ky ehfM;k ij gks jgh ok;jy] vkbZlh,evkj us crk;k lp] fgUnqLrku] ubZ fnYyh] 7 ebZ 2021]
41. Fighting misinformation in the time of COVID -19, one click at a time, WHO website , 27 April 2021.
42. Jimenez ; Darcy , Covid-19 vaccines: the role of social media in disinformation, Pharmaceutical-Technology, 04 Jun 2021 (Last Updated July 5th, 2021, , https://www.pharmaceutical-technology. com/features/covid-19-vaccine-disinformation-social-media/
43. . El-Elimat T, AbuAlSamen MM, Almomani BA, Al-Sawalha NA, Alali FQ (2021) Acceptance and attitudes toward COVID-19 vaccines: A cross-sectional study from Jordan. PLoS ONE, 16(4): e0250555. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0250555
44. Vaccines are satanic': Bolivia battles fake news in inoculation drive, Reuters, Reuter.com, May 21, 2021, https://www.reuters.com/world/ americas/vaccines-are-satanic-bolivia
45. How to Spot Real and Fake News, Mindtools, https://www.mindtools. com/pages/article/fake-news.htm
46ण फेसबुक बता रहा है कैसे पहचाने कौन सी खबर है असली और कौन सी है फर्जी? खबर न्यूज डेस्क, एनडीटीवी, इंडिया, अपडेटेड 22 सितम्बर, 2017 तनिश्क, इंटरनेटनेट पर फेक न्यूज की भरमार, सूचना असली है कि फर्जी, bu rjhdks ls [kqn djsa igpku] Jagran.com,, jagran.com/news/national-fake-news-on-internetinformation 13 Feb 2021
47. Dr. J. Scott Brennen ,Felix Simon,Dr Philip N. Howard,Prof. Rasmus Kleis Nielsen, Types, sources, and claims of COVID-19 misinformation, 7 April 2020, https://reutersinstitute.politics.ox.ac.uk/types-sourcesand-claims-covid-19-misinformation, Retrieved on July 20,2021
48. https://toolbox.google.com/factcheck/explorer
49. Stop the spread of fake news, TNN / Times of India , Apr 30, 2021,
50. Akhilesh Sharma, Roobina Mongia, Edited by Chandrashekar Srinivasan "Twitter Move Not For Criticism, But Fake Covid News": Government Sources , NDTV, Updated: April 25, 2021 , https://www. ndtv.com/india-news/india-coronavirus-centre-says-twitter-postsdeleted-for-spreading-fake-news-not-criticism-2421324
51. Advisory to curb false news / misinformation on corona virus by Government of India Ministry of Electronics and Information Technology Electronics Niketan, 6, CGO Complex, New Delhi – 110003, Website: www.meity.gov.in to all social media plteforms
52ण फेक न्यूज को बैन करने के लिए फेसबुक उठायेगा यह कदम, एनडीटीवी इंडिया, 19 जुलाई, 2018
53. 54. WHO websi

◆◆◆